ISSN-2582-144X

व्यवसायिक –ष्टिकोण से बछड़ों–बछड़ियों का वैज्ञानिक प्रबंधन

संजीव कुमार[1], सूर्यमणि कुमार[2] एवं रविरंजन कुमार[3]

"डेयरी फार्मिंग में बछड़ो एवं बछड़ियों का प्रबंधन व्यवसायिक हष्टिकोण से खासा महत्व रखता है। एक प्रचलित कहावत भी है "मूल से ज्यादा प्यारा सूद होता है" ठीक वैसा ही डेयरी फार्मिंग व्यवसाय में बछड़ों एवं बछड़ियों सूद जैसा ही है, जो भविष्य का डेयरी का निर्माण करते हैं जिसका अच्छी तरह से वैज्ञानिक प्रबंधन कर इस धंधा में अतिरिक्त लाभ अर्जित किया जा सकता है।"

डेयरी व्यवसाय की सफलता बछड़ों–बछड़ियों के उचित पालन एवं पोषण पर बहुत हद तक निर्भर करता है। साथ ही डेरी फार्मिंग से अधिक लाभ उठाने के लिए इनका मृत्यु की दर को कम करना भी आवश्यक है। बछड़ों का पालन–पोषण सही ढंग से करने से जहां पशु का स्वास्थ्य अच्छा रहता है, वहां दूसरी ओर नस्ल के वंश परम्परागत गुणों में भी वृद्धि हो जाती है।

माँ के साथ

स्वस्थ बछड़े

बछड़ों की वैज्ञानिक देखभाल कैसे करें ?

बछड़ों को माँ से अलग करना – बछड़े के पैदा होते ही या जन्म के चार–पांच दिन पश्चात थन से दूध पीना छुड़ा देना चाहिए। क्योंकि, ऐसा करने से दुधारु पशु के दुग्ध उत्पादन के सही आंकड़े प्राप्त किए जा सकते है और जिससे अच्छी नस्ल की जानकारी शीघ्र प्राप्त की जा सकती है। बछड़ों को अगर थन से ही दूध पीने दिया जाता है तो यह अनुमान करना अत्यन्त मुश्किल प्रतित होता है कि बछड़े ने कितना दूध पिया है। यदि बछड़ा अधिक दूध पी लेता है तो वह अस्वस्थ हो सकता है और कम दूध पीने से कुपोषण से ग्रसित हो सकता हैं। संकर तथा विदेशी गायों से बछड़ें अलग करने में परेशानी नहीं होती है, परन्तु देसी गायों से बछड़ों को अलग करने में थोड़ी समस्या होती है। बछड़े को अलग दूध पिलाने से मां का बछड़े के प्रति महत्व को भी रोका जा सकता है। माँ के बछड़े को अलग करके सर्वप्रथम बछड़े को निप्पल से तथा रबड़ की नील से दूध पिलाना चाहिए, परन्तु कुछ बछड़े इस प्रकार दूध नहीं पी पाते है। उन्हे मुंह में दो उंगली डालकर दूध पिलाना चाहिए। दूध धीरे–धीरे ही पिलाना चाहिए।

नवजात बछड़ा

बछड़ो की मृत्यु दर कम करना

बछड़ों की मृत्यु डेरी व्यवसाय की एक प्रमुख समस्या है। जन्म के तुरन्त पश्चात की काफी संख्या में बछड़े मर जाते है। क्योंकि अनेक प्रकार की संक्रामक बीमारियों का प्रभाव उन पर जल्दी पड़ जाता है। अगर बछड़ों के पोषण और प्रबन्ध पद्धति में सुधार लाया जाये तो बछड़ों में रोग प्रतिरोधक क्षमता को उत्पन्न किया जा सकता है और दुधारु पशु को विभिन्न बीमारी से बचाया जा सकता हैं

नाभिका बन्द करना

नाभि द्वारा संक्रमण या बीमारी फैलने की प्रबल सम्भावना रहती है क्योंकि यहां से जीवाणु खून में पहुंच कर भयंकर बीमारी पैदा कर देते है। काफी संख्या में बछड़ों को नाभि की बीमारी हो जाती है, जिससे वे मृत्यु के शिकार हो जाते है। बछड़े के पैदा होने के तुरन्त बाद ही कीटाणु नाशक दवाइयों से कटी हुई नाभि की सफाई करनी तो आवश्यक है। साथ ही टिंचर आयोडीन में भीगा हुआ फोआ भी नाभि में धुसा देना चाहिए। शरीर से कुछ दूरी पर नाभि को धीरे–से बांध देना चाहिए। रूई का फोआ नाभि नाल अपने आप कुछ दिन

[1]सह–प्राध्यापक,
[2]सहायक प्राध्यापक, संजय गाँधी गव्य प्राद्यौगिकी संस्थान, पटना
[3]सहायक प्राध्यापक, बिहार पशु चिकित्सा महाविद्यालय, पटना

बछड़े का आवास व्यवस्था

में सूख कर गिर जाता है और नाभि ठीक हो जाती है। इस प्रकार नाभि द्वारा संक्रमण को रोका जा सकता हैं।

बछड़ों की आवास व्यवस्था

बछड़ों को माँ से अलग करने के पश्चात बछड़ो को अलग रहने की व्यवस्था करनी चाहिए। तीन माह तक बछड़ो को माँ से अलग रखना चाहिए। इन बछड़ो को जमीन की सतह से ऊपर गौशाला में रखा जाये तो स्वास्थ्य की दृष्टि से अच्छा रहता है। बछड़ो को सफेद दस्त की बीमारी भी कम होती है। व्यवसायिक फार्मों पर बछड़ो को बड़े–बड़े बाड़ो में रखा जाता है। लेकिन उनको अलग से दूध पिलाया जाता है यदि सबकों एक साथ दूध पिलाया जाएगा तो ताकतवर बछड़े अधिक दूध पी जाएंगे और कमजोर तथा धीरे पीने वाले बछड़े पीछे रह जाएंगे। बछड़ो को ताजा स्वच्छ पानी भरपूर मात्रा में पिलाया जाना चाहिए।

खीस (कोलोस्ट्रम) पिलाना

नवजात बछड़ों के स्वास्थ्य के लिए खीस पिलाना सेहत के लिए वरदान है, इसका प्रभाव न केवल स्वास्थ्य पर ही पड़ता है अपितु इससे बछड़ो की रोग प्रतिरोधक क्षमता भी बढ़ती है। अतः जन्म के दो घंटे के अन्दर बछड़ो को खीस पिला देना चाहिए। यह खीस चार–पांच दिन तक अवश्य पिलाना चाहिए। खीस से बछड़े के शरीर में रोग प्रतिरोधक क्षमता की बढ़ोतरी होती है और इससे अनेक बीमारियों से बचाव हो जाता है। पौष्टिकता की दृष्टि से खीस का काफी महत्व है। इसमें रेचक (दस्तावर) गुण होता है, जिससे बछड़े के पेट में इकट्ठे मल आदि की सफाई हो जाती है। यदि गाय किसी कारणवश दूध नहीं देती है तथा बछड़ो को अपनी माँ का दूध नहीं मिल पाता है तो इस स्थिति में सारिणी–1 के अनुसार एक खुराक हेतु अण्डा के साथ अरण्डी का तेल मिलाकर खिलाना चाहिए।

सारिणी 1: खीस (कोलोस्ट्रम) का विकल्प

सामाग्री	मात्रा
अंडा	1 पूरा
पानी	300 मिलीलीटर
अरंडी का तेल	आधा चम्मच
पूर्ण दूध	600 मिलीलीटर

बछड़े को दूध पिलाना

बछड़े के लिए दूध सर्वश्रेष्ठ संतुलित राशन है। अतः बछड़े को पांच दिन पश्चात दूध पिलाना आरम्भ कर देना चाहिए। दूध पर पाले गये बछड़ों की बढ़ोतरी ठीक ढंग से होती है। 1.39 किलोग्राम दूध के शुष्क पदार्थ के बदले एक किलों ग्राम शरीर भार बढ़ता है। दूध को बछड़े की पाचन क्रिया आसानी से पचा लेती है। अतः वैज्ञानिकों द्वारा सुझाव होता कि बछड़े को पर्याप्त मात्रा में दूध मिलना आवश्यक है। सारिणी–2 में खीस एवं दूध के घटक को तुलनात्मक रूप में प्रस्तुत किया गया है।

बोलत से दूध पिलाना

सारिणी 2: खीस एवं दूध के घटक

घटक	खीस (प्रतिशत)	दूध (प्रतिशत)
कुल ठोस	28.3	12.86
वसा	0.15–12 (2.9)	4.00
सर्करा (लैक्टोज)	2.5	4.8
राख	1.58	0.72
कुल प्रोटीन	21.32	3.34
ग्लोब्युलिन	15.06	0.00
केसीन	4.76	2.8
एल्बुमिन	1.5	0.54

बिहार के मुजफ्फरपुर में एक अनोखी गौशाला है जहां गाय का हर बच्चा अपनी मां का नाम जानता है। इसके लिए गौशाला में नवजात बछड़े–बछड़ियों को ट्रेनिंग दी जाती है।

प्रथम तीन महीने के दौरान बछड़ों को पर्याप्त मात्रा में दूध दिया जाए या अच्छे किस्म के प्रोटीन से युक्त एवं कम रेशे वाले काफ स्टार्टर के साथ चार से पांच सप्ताह तक कम से कम 110 लीटर शुद्ध दूध पिलाया जाये। खीस के अलावा बछड़े को 7–10 सप्ताह की उम्र तक कम से कम शुद्ध दूध 160 लीटर पिलाना बहुत आवश्यक है।

सारिणी 3 : बछड़े का दूध पिलाने का तालिका (1)

आयु (दिन)	खीस (लीटर)	दूध (लीटर)
0–4	शरीर भार के दसवें भाग के बराबर	–
4 दिन से ऊपर	–	60 किलो ग्राम शरीर भार तक के बच्चे को शरीर भार के 1/10 भाग के बराबर

उपरोक्त **सारणी (3)** के द्वारा अच्छे परिणाम डेयरी व्यवसायों को प्राप्त हुए है लेकिन यह पद्धति काफी खर्चीली है।

सारिणी 4: बछड़े का दूध पिलाने का तालिका (2)

शरीर भार (किग्रा.)	आयु (दिन)	खीस (लीटर)	दूध (लीटर)
30 तक	0–4	शरीर भार के दसवें भाग के बराबर	–
30 तक	5–90	–	शरीर भार के दसवें भाग के बराबर
31–60	–	–	1/20 भाग के बराबर

अलग किये गये बछड़ों को सामान्य तापमान के बराबर गरम दूध पिलाना चाहिए। विशेष कर खनिज तत्व जैसे (Fe, Cu, Mg, Mn, Zn) भी दिये जाने चाहिए। 100 ग्राम शुष्क पदार्थ के बराबर हरा चारा 15 दिन की उम्र के बाद से रोज शुरू कर देना चाहिए, जिससे कि अमाशय के विकास में सहायता मिलती है।

उपरोक्त सारणी (4) के आधार पर 26 कि.ग्रा. जन्म के भार वाले बछड़े को 3 महीने की आयु में 54 कि.ग्रा. का किया जा सकता है। इस प्रकार से बछड़ों–बछड़ियों का पोषण प्रबंधन करने से ना केवल बछड़ो मे मृत्यु दर कम किया जा सकता है बल्कि बछड़ों का स्वास्थ भी उतम होगा जिससे डेयरी व्यवसाय मे ज्यादा मुनाफा प्राप्त किया जा सकेगा।

निष्कर्ष

डेयरी व्यवसाय से जुड़े लोग अगर वैज्ञानिक पद्धति से बछड़ो एवं बछड़ियों का प्रबंधन करते हैं तो इसका दुग्ध उत्पादन पर तो अनुकूल प्रभाव पड़ेगा ही, साथ में उनके बछड़ो एवं बछड़ियों के मृत्यु दर में भी कमी आएगी एवं स्वस्थ होंगे। जिससे किसानों को भविष्य का डेयरी का निर्माण करने में सहायता होगा और अंततः आय में बढ़ोतरी होगी।